रात्रि क्लास 3/10/68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?
बच्चों को बुद्धि में है अब अपने घर जाना है। बुद्धि जो आत्मा में है, बुद्धि कहती है कि अब तो ..... चलने का है। जो कुछ देखने में आता है चलते चलते यह सब खत्म हो जाने का है। यह ज्ञान है ना। बाप बच्चों को समझाते हैं। बच्चों को यह निश्चय है हम इस पुरानी दुनिया के लिए नहीं पढ़ते हैं। हम वास्त(व) ..... पुरानी दुनिया में है ही नहीं। हम तो संगमयुग पर हैं। संगमयुग पर ही पुरानी दुनिया और नई दुनिया ..... का ज्ञान होता है। तुम बच्चों को ही यह ज्ञान है। आज यहाँ है कल वहाँ होंगे नई दुनिया में वाया शाि..... बीच में सफाई भी हो जाये। हम नई दुनिया में जावेंगे तो पुरानी दुनिया की कितनी सफाई हो जाती है। वह है बिल्कुल शुद्ध। यह है बिल्कुल अशुद्ध। इसलिए अभी अपन को आत्मा समझ देह को छोड़ना है। बच्चे जानते हैं। और कोई नहीं जानते कि घर जाना है। बाप ने समझाया है तुम सभी ब्राइड्स को मैं ब्राइडग्रुम आया ..... नई दुनिया में ले जाने लिए। तुम जानते हो हम सभी को बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। सजनियाँ भी भक्तियों को कहा जाता है। बच्चों को रास्ता बड़ा ही सीधा बताते हैं याद करने से पावन बनना है। इस समय तुम बच्चों को ज्ञान है हम जिसको याद करते हैं उनके पास ही पहुँच जावेंगे। भक्ति में कोई पहुँचते नहीं हैं। सा0 करते हैं। तुम जानते हो हम अभी पहुँच जावेंगे। अच्छी तरह जानते भी हो फिर घर भी पहुँचते हो। बहुत समय हो गया है घर से आये। तो बच्चों को ढूढ़ने का नहीं रहता। ड्रामा में नूँध है। काम पर चढ़कर सभी काले बन गये हैं। अर्थात् भस्म हो गये हैं। आग लगती है तो सभी काले हो जाते हैं ना। अभी तुम सभी ज्ञान चिक्षा पर सवार हो। गोरे बन जावेंगे। बाहर जब रहते हैं तो सभी बच्चे पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थ कराने वाले भी खुद पुरुषार्थी हैं। यहाँ बाप को तो पुरुषार्थ करना न है। कराने वाला मिलता है। दादा को करना है। बाप को कराना है। बाहर में तुम पुरुषार्थ करते हो कराते हो। यह बातें ऐसी हैं जो कोई की भी बुद्धि में बैठ न सके। समझाने वाला जरूर चाहिए। तुम कितना भी समझा के लिखो तो भी लिखने से कोई समझ जाये वह नहीं हो सकता। स्टुडेन्ट को टीचर जरूर चाहिए। यहाँ आने से ही बच्चे समझते हैं। और सभी तरफ से बुद्धि को हटाये यहाँ लगा देते हैं। बच्चों को सुख मिलता है। शान्तिधाम सुखधाम को भी तुम जानते हो। इस याद की यात्रा का ही महत्व है। जिससे तुम पतित से पावन बनते हो। बनाने वाला यहाँ बैठा है। भक्तिमार्ग में महत्व की बात ही नहीं। यह भी बाबा समझाते हैं भक्तिमार्ग का चक्र पूरा फिर लगना है। सिर्फ समझाते हैं भक्ति क्या है, ज्ञान क्या है। बच्चों को वृद्धि भी होती जाती है। स्वदर्शनचक्रधारी बनने से ही तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। इसलिए दिखाते हैं तुम्हारे पैर में पदम हैं। पैर नहीं चलते। बुद्धि जाती है। तुम पदमपति बनने वाले हो। यह भी समझते हो पैर में पदम क्यों है। बाप कहते हैं कदम कदम में पदम है। है सारी बुद्धि की बात। यह समझाने वाला भी बाप चाहिए ना। ऐसे नहीं कि कोई समझ न सके। ज्ञान से ही सुख मिलना है। दुख की बात होती नहीं। ज्ञान से किसको नुकसान हो यह हो नहीं सकता। कोई मिस अन्डरस्टैन्डींग हो जाये यह और बात है। ज्ञान से कल्प2 सदगति होती है। उनसे कोई दुर्गति वा नुकसान हो न सके। भक्ति से नुकसान होता है। बाप ऐसे कब बोलेंगे नहीं जिससे कि नुकसान हो। फायदा ही फायदा, खुशी ही खुशी है। हो सकता है बच्चों को ईश्वरीय लाटरी मिलती है ना तो कोई को खुशी का पारा जोर से चढ़ जाता है; परन्तु लॉटरी देने वाला फिर थोड़ा ठीक कर देते हैं। बाकी बेहद के बाप का ऐसा भूल कब निकलेगा नहीं। यह तो गारन्टी है। बाप का नाम ही है दुख हर्ता सुख कर्ता। तो दुख रिंचक भी नहीं हो सकता। आज सभी फकीर हैं कल अमीर विश्व के मालिक बनने वाले हैं। कहावत कहते हैं ना फ्लो एक बनियाँ था.....तुम सेकण्ड में फकीर से अमीर बनते हो। यह है बेहद का गांव। कल शहर में चले जावेंगे।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।